Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 03, (अगस्त, 2025)
पृष्ठ संख्या 45–47

पीला एवं बैगनी फूलगोभी का महत्त्व एंव उत्पादन तकनीक

डॉ0 अभिषेक प्रताप सिंह, डॉ0 चेलपुरि रामुलु, डॉ0 सौरभ दुबे, डॉ0 हर्षा बी. आर. एवं डॉ0 जगपाल

कृषि विज्ञान केंन्द्र, माधोपुर पच्छिम चम्पारण,
डॉ0 राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृशि विश्वविद्यालय,
पूसा, समस्तीपुर, बिहार–845454, भारत।

Email Id: – abhishek.veg@gmail.com

जीवन में रंगों का कितना महत्वपूर्ण स्थान है। जिसका असर हमारे जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर दिखाई देता है लेकिन बहुत कम लोग ही जानते है कि इन रंगो का प्रभाव भी हमारे सेहत पर भी पड़ता है। रंगीन फूलगोभी की खेती फूलगोभी की भांति ही होती है इसकी खेती करके किसान भाई अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते है तथा हमारा देश पोषण की दृष्टिकोण से भी मजबुत होगा। पीला फूलगोभी को स्वाद ही नही स्वास्थ के लिए भी गुणकारी माना जाता है। इस फूलगोभी मे कैरोटीनॉयड, फ्लेवोनोइड, एस्कार्बिक एसिड, पोटैशियम, एन्टी–आक्सीडेन्ट, विटामिन्स विषेशकर वायोफ्लेनायड यानी विटामिन 'पी' पाया जाता है व जरुरी मिनिरल पाये जाते है। जिसके सेवन से भारीर मे कोलेस्ट्राल एवं ब्लड प्रेशर के स्तर को नियत्रित किया जा सकता है एवं साथ ही चेहरे की झुर्रिया को कम करने मे मददगार है। जो अपने स्वाद और सेहत के गुणों के कारण दुनिया भर मे म ाहूर है जिसका सब्जी बनाने से लेकर, पराठे, पकौडे, के साथ ही साथ आचार भी बनाया जाता है हमे अपने दैनिक आहार मे पीले रंग के फल और सब्जियों को भामिल करना चाहिए ऐसा करने से न सिर्फ स्वास्थ बल्कि त्वचा भी चमकदार बनती है जिस व्यक्ति की इम्युनिटी कमजोर है उसके लिए ऐसी फूलगोभी का सेवन करना वरदान साबित होगा। फूलगोभी मे बैगनी रंग फ्लेवोनोइडस और एन्थोसायनिन की उपस्थिती के कारण होती है जो एक भाक्तिशाली एंटीआक्सीडेंट होने के साथ ही साथ भारीर की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत करने एवं क्षति से बचाने का कार्य भी करते है साथ कैंसर के खतरो को भी कम करने मे सहायक सिद्ध होती है तथा गर्भवती महिलाओं एवं बुजुर्गो के लिए बहुत ज्यादा फायदेमंद है।

जलवायू :

इसकी खेती के लिए ठंडी एवं आर्द्र जलवायू की आव यक्ता होती है। पौधो की अच्छी वृद्धि के लिए तापक्रम 20–25°C होना चाहिए।

भुमि एवं भुमि की तैयारी :

इसकी खेती सभी प्रकार की भुमियों जिसमें जीवा म पदार्थ की मात्रा अधिक हो, जल निकास की व्यवस्था हो, वहा पर इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। मृदा का पी0 एच0 मान 5.5 से 6.6 होना उपयुक्त होता है । भुमि की तैयारी के लिए 3–4 जुताईयॉ करने के उपरान्त पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए।

प्रमुख किस्में :

कैरोटीना (पीला रंग) एंव बैलीटीना (बैगनी रंग) मुख्य संकर किस्में है।

बीज की मात्रा तथा बुवाई का समय :

इसकी खेती का समय सितम्बर –अक्टुबर माह में नर्सरी तैयार करना चाहिए। जिसके लिए 200–250 ग्राम बीज एक हेक्टेयर खेत के लिए पर्याप्त है।

रोपाई का तरीका :

जव पौधे 4–5 सप्ताह के हो जाये तब मुख्य खेत में 60X60 सेमी अथवा 60x45 सेमी की दुरी पर रोपाई करना चाहिए एवं रोपण के प चात हल्की सिचाई करना आव यक होता है।

खाद एंव उर्वरक :

गोबर की सड़ी हुई खाद 300 कुन्टल एंव मृदा जांच के आधार पर अनु ंसित मात्रा मे रसायनिक उर्वरको का व्यवहार किया जाना चाहिए अगर मृदा जांच नही हुआ है तव ऐसी दशा में 120 किग्रा नत्रजन 60 किग्रा फास्फोरस तथा 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करते है। गोवर की खाद अथवा कम्पोस्ट की पूरी मात्रा रोपाई के 15 दिन पूर्व भुमि में मिला देना चाहिए। फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा एंव नत्रजन की आधी मात्रा पौध रोपण के 3 दिन पुर्व खेत में डालकर अच्छी तरह से मिला लेते है तथा शेष बचे नत्रजन ठीक मात्रा को दो बराबर भागों में बाटकर रोपाई के 30–35 दिन एंव 45 से 50 दिनों के अन्तराल पर टापड्रेसिग के रूप में प्रयोग करते है इसके अलावा अमोनियम मोलिबेट 1.5 किग्रा तथा बोरान की 10 किग्रा मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में निराई– गुड़ाई एंव मिट्टी चढाने के समय देना चाहिए ।

सिचांई :

इसकी सफल खेती के लिए पौधा रोपने के वाद आव यक्तानुसार 10 से 15 दिनो के अन्तराल पर सिचाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियत्रण :

रोपाई के 3 सप्ताह बाद निराई–गुड़ाई कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करना चाहिए एंव आव यक्तानुसार निकाई – गुड़ाई करते रहना चाहिए।

कटाई एंव उपज :

पौध रोपण के 100–110 दिनो पश्चात रंगीन फूलगोभी की फसल कटाई योग्य तैयार हो जाती है जिससे लगभग 200 से 300 कुन्टल प्रति हेक्टेयर औसत उपज प्राप्त हो जाती है।

फसल में लगने वाले प्रमुख कींट एंव रोग :

डायमंड बैक माथ :

इस कींट के शिशु सर्व प्रथम पत्तियो में छेंद कर तने में प्रवेश कर जाते है जिससे पौधो को पत्तियां पीली होकर सुख जाती है

रोकथाम :

- इसकी राकथाम के लिए वैसिलस धूरिंजिएंसिस के घोल का छिड़काव करना चाहिए।
- व्यस्क किंट को पकड़ने के लिए फैरोमेान ट्रेप का इस्तेमाल करें ।
- मेटासिस्टाक्स 2 मिली0 प्रति लीटर पानी की दर से स्टीकर मिला कर छिड़काव करना चाहिए।

सरसो की मंक्खी :

इसके पौढ कींट पत्तियों के उत्तको के बीच उण्डे देते है जो वाद में कैटरपिलर के रूप में आकर पत्तियों को खाकर नुकसान पहुचाते है।

रोकथाम : डायमंड वैकं माथ की भाति इस कींट को रोकथाम कर सकते है।

एफिंड :

यह छोटे– छोटे हल्के हरे रंग या काले रंग के कींट होते है जो पत्तियों एंव कोमल भागों का रस चुसते है।

रोकथाम : डायमेथोएट का छिड़काव काफी लाभदायक है।

आर्द्धगलन :

यह गोभी वर्गीय सब्जियों की प्रमुख बिमारी है जिससे बीजांकुर सड़कर गिर जाते है पत्तियों का मुरझाना एंव सुखना भी दिखाई पड़ता है।

रोकथाम :

- बीज की बुवाई से पूर्व पौध ाला क्षेत्र को 3 से 4 सप्ताह पूर्व फारमल्डिहाइड से उपचारित करना चाहिए।
- बीज को ट्राइकोडर्मा 5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित तथा भुमि में 20 ग्राम प्रति वर्गमीटर की दर से उपयोग कम्पोस्ट में मिलाकर करें ।
- रोग लगने की दशा में पौधशाला में सिंचाई नहीं करना चाहिए ।

काला विगलन :

यह गोभीवर्गीय सब्जियो का प्रमुख रोग है जो जेन्थोमानास कम्पौस्ट्रिस नामक जीवाणु से होता है पत्तियों पर अग्रेजी के (v) आकार के भुरे या पीले रंग के धब्बे दिखाई पड़ते है तथा डंठल एंव जड़ के भीतरी भाग काले पड़ जाते है।

रोकथाम : रोग ग्रसित पौधो को इकट्ठा करके नश्ट कर देना चाहिए, फसल चक्र अपनाना चाहिए।

कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 0.3% तथा स्ट्रैप्टोसाइक्लीन 200 पी0 पी0 एम0 का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए ।

रंगीन फूलगोभी की खेती में आय एंव खर्च का बिवरण (200 वर्ग मी0 क्षेत्रफल में)
(लाभ : लागत अनुपात)

- उत्पादन लागत : रू 2500.00
- पौध से पौध एंव लाइन से लाइन की दुरी = 60x60 सेमी, (555पौधा)
- एक फूलगोभी के फूल का औसत वजन = 850 ग्राम
- औसत उत्पादन = 471.75 किग्रा
- विक्रय मुल्य = 25 प्रति किग्रा
- कुल आय (रू) = 11793.75
- भुद्ध आय (रू) = 9293.75
- लाभःलागत अनुपात : 4.71